SANT LAL RAVAT, Asstt. Prof., Deptt. of Education
N.A.S.

M.Ed. IV - Sem.
Unit - IV -
Topic III

एक सेवारत शिक्षक, शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन -
एक शिक्षक शिक्षक द्वारा समस्याओं (आम समस्या) का सामना करना और संचार के लिए दिशा निर्देश, पूर्व प्राप्ति की भागीदारी के लिए दिशा निर्देश (व्यवस्था, तैयारी) प्रति क्रिया, मूल्यांकन =

→ शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगो, (1) अध्यापक (2) छात्र (3) पाठ्यवस्तु

अध्यापक गण शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं। और अपने छात्रों को वांछित व्यवहार परिवर्तन में मदद प्रदान करते हैं। उनको सर्वांगीण विकास के पथ (रास्ते) पर चलने में मदद करते है। अध्यापक शिक्षा प्रणाली का केन्द्र होता है। उपरोक्त समस्त शिक्षा व्यवस्था को वो जीवन्त बनाने में मदद करता है। तमाम झंझावतों के बावजूद अवस्थाओं से परे अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास में मदद करते हैं।

हमारा वर्तमान राष्ट्र व समाज परिवर्तन व विकास के नाजुक परन्तु अत्यन्त महत्व पूर्ण दौर से गुजर रहा है ऐसे समय में अध्यापकों (शिक्षको) का उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

डा० राधाकृष्णन - "समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्व पूर्ण होता है वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं व तकनीकी कौशलों के हस्तांतरण के साधन के रूप में तथा सभ्यता की ज्योति प्रज्जवलित रखने में सहायता प्रदान करता है।"

अध्यापक (शिक्षक) शिक्षा का कार्यक्रम भावी अध्यापकों तथा सेवारत अध्यापकों के व्यक्तिगत सामाजिक, नैतिक, व्यवसायिक तथा सांस्कृतिक विकास करके उन्हें अध्यापक के विभिन्न उत्तरदायित्वों को सफलता पूर्वक व प्रभावशाली ढंग से पूरा करने के लिए योग्य बनाता है।

→ जैसे कि वैदिक काल में यह कार्य आध्यात्मिक माना जाता था उस समय की सामाजिक व्यवस्था में सभी आदर्श यथा सामाजिक, व्यक्तिगत, राजनैतिक, नैतिक, धार्मिक आदर्श अध्यापक के चारों ओर केन्द्रित रहते थे। बौद्ध काल में शिक्षक शिक्षा का महत्व स्वीकार किया जाने लगा और प्रसार मिलने लगा कि सभी वर्ग के बिना भेदभाव के अध्यापन का अधिकारी है।

मुस्लिम काल में - कोई औपचारिक स्वरूप नहीं था शिक्षा सार्वजनिक थी तथा प्रारम्भिक शिक्षा मौलवियों द्वारा मस्जिदों में दी जाती थी। ब्रिटिश युग में - वृत्ति (Profession) के रूप में विकसित होने लगा था। माँग बढ़ी और प्रशिक्षणों की आवश्यकता — सर्वप्रथम सन् 1819 में कलकत्ता विद्यालय समाज - प्राथमिक शिक्षा

1924 में बम्बई में देशी विद्यालय समाज -
1926 - में मद्रास शिक्षा समाज - प्रा० शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था

1854 वुड के घोषणा पत्र
1882 हण्टर आयोग
1904 लार्ड कर्जन
} प्रशिक्षण केन्द्र खोलने के लिए सुझाव दिये।

1948 में राधाकृष्णन कमीशन के सुझाव शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में -

A → व्यवहारिक प्रशिक्षण पर बल -
B → शिक्षण अभ्यास के लिए अच्छे विद्यालय का चयन -
C → ट्रेनिंग कालेजों में दक्ष शिक्षकों की नियुक्ति -
d → पाठ्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप -
e — शिक्षक भारतीय पृष्ठभूमि के आधार पर अनुसंधान करे -

1952-53 में मुदालियर -
(A) → स्नातक तथा अवर स्नातकों के लिए अलग शिक्षण पाठ्यक्रम -
(B) → एक या दो पाठ्येत्तर क्रियाओं में शिक्षकों को प्रशिक्षण

Scanned by CamScanner

ⓒ छात्रवृत्तियाँ व छात्रावासों की सुविधा -
ⓓ रिफ्रेशर कोर्स, वर्कशाप, कान्फ्रेंस आदि का आयोजन -
ⓔ ट्रेनिंग कालेजों में रिसर्च -
ⓕ एफीलियेटेड कालेजों में भी ट्रेनिंग डिपार्टमेंट

1964-66 — कोठारी कमीशन —

Ⓐ→ ओरियन्टेशन पाठ्यक्रम चलाये जाय -
Ⓑ→ सामान्य तथा व्यवसायिक शिक्षा में समन्वित पाठ्यक्रम -
ⓒ→ उन्नत शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन विधियों का प्रयोग -
ⓓ→ पाठ्यक्रमों में संशोधन हो -
ⓔ→ कार्यदिवस वृद्धि हो -
ⓕ→ योग्य स्टाफ नियुक्त हो
ⓖ इन्टर्नशिप कार्यक्रम शिक्षण अभ्यास के लिए चलाये -
ⓗ शिक्षण शुल्क समाप्त / छात्रवृत्ति प्रदान / छात्रावास
ⓘ पुस्तकालय, प्रयोगशाला तथा कार्यशाला सुविधाओं का विस्तार

1990 — राम मूर्ति समिति — (संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा समिति)

Ⓐ प्रशिक्षार्थियों का चयन अंक व ग्रेड के आधार पर न होकर अभिरुचि व उपलब्धि
Ⓑ प्रशिक्षण कार्यक्रम दक्षता आधारित -
ⓒ सिद्धान्त और अभ्यास स्थिति मजबूत -
ⓓ कार्यक्रम भावात्मकता है जिससे शिक्षण व्यवसाय के प्रति जागरूकता तथा मूल्य विकास
ⓔ विषयवस्तु - ज्ञान, कौशल तथा अभिरुचि पर बल दिया जाय -

सेवारत शिक्षक, शिक्षक शिक्षा के उद्देश्य -

①→ मानव मूल्यों का विकास
②→ सामाजिक परिवर्तन का साधन
③→ सम्पर्क सूत्र | मार्ग दर्शक (नेता)
④→ प्रत्यावर्तन | सकारात्मक मनोवृत्ति
⑤ शिक्षण क्षमता | संप्रेषण | शिक्षण क्षमता
⑥ विकास तथा अभिवृद्धि
⑦ ज्ञान तथा कौशल
⑧ शोध तथा अन्वेषण

Scanned by CamScanner

एक शिक्षक, शिक्षक के सामने आम समस्याएं → शिक्षक शिक्षा की कुछ महत्व पूर्ण समस्याओं का विवरण इस प्रकार है जैसे –

1- प्रवेश की समस्या :-
2- प्रदर्शनात्मक विद्यालयों का अभाव :-
3- अनुपयुक्त पाठ्यक्रम :-
4- दोष पूर्ण परीक्षा प्रणाली :-
5- छात्राध्यापकों का नकारात्मक दृष्टिकोण :-
6- अच्छे शोध कार्यों का अभाव :-
7- सेवा कालीन अध्यापक शिक्षा की अपेक्षा :-
8- अध्यापक शिक्षा में अलगाव :-
9- मानवीय मूल्यों का अभाव :-

वर्तमान में सेवा तथा कार्य की समस्याएं जैसे - दो प्रकार के विद्यालय है 1- शासकीय 2- वैयक्तिक प्रबन्ध वाले ये दोनों ही सेवा तथा कार्य की दशाओं को प्रभावित करते है। आप सरकारी और सेल्फ फाइनेंस ट्रेनिंग व अन्य व्यवसायिक कालेजों की स्थिति से भली भांति परिचित है।

शिक्षक शिक्षा - प्रसार - (संप्रेषण)

शिक्षक शिक्षा के मानदण्ड बदल दिये गये है। आज यह शिक्षा राष्ट्रनिर्माण का एक सशक्त एवं अनुपेक्षणीय सीढ़ी बन गयी है जैसे –

A- प्रशिक्षण की सुविधाएं :-
B- सेवा कालीन प्रशिक्षण :-
C- शैक्षिक योग्यता :-
d- संस्थाओं का सम्बद्धीकरण :-
e- पाठ्यक्रम सुधार :-
f- प्रवेश के मान दण्ड :-
g- सेवा कालीन प्रशिक्षण (पूर्व प्रशिक्षण) :-
h- अप्रशिक्षित अध्यापकों का प्रशिक्षण :-

Scanned by CamScanner

(8) गति निर्धारक संस्था :-

(9) शिक्षक शिक्षा का संगठन :-

(10) शिक्षक कल्याण :-

(11) शोषण :-

पूर्व प्राप्ति की भागीदारी के लिए दिशा निर्देश एवं प्रतिक्रिया - निगरानी करना, आकलन, फीडबैक देना और मूल्यांकन करना। अब आप शिक्षक शिक्षण कार्य निगरानी करेंगे कि आमुख छात्र की क्या - समस्याएं, बाधाएं आ रही हैं उनका समाधान तुरन्त करें गुणात्मक सुधार करें, संचार एवं सम्पूर्ण तैयारी सहभागिता को और सरल एवं सुविधा जनक बनायें, प्रत्येक कक्षा व छात्र, अभिभावक शिक्षक से फीडबैक प्राप्त करके उनका उचित मार्गदर्शन करें अपने - अपने विद्यार्थियों को उन्हें स्वयं के लेखन, पाठन, और व्यवहार परिवर्तन आदि का मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित करें। छात्रों की सूचनाएं व प्रमाण एकत्रित करें। रिकार्डिंग करें, सुधार के लिए योजनाएं बनाएं अतिरिक्त संसाधन का निर्माण करें।

Evaluation - मूल्यांकन →
- formative
- summative
- Diagnostic

Techniques of Evaluation
- Psychological Test
- Interview
- case study
- observation
- Self Report
- Aneodotal Record
- Rating scale
- portfolio

मूल्यांकन के महत्व :-> (1) छात्रों को अध्ययन की ओर अग्रसारित (2) व्यक्तिगत मार्गदर्शन में सहायता (3) उद्देश्यों की प्राप्ति (4) कमजोरियों को जानने (5) प्रगति (6) व्यवसायिक मार्गदर्शन में सहायक

[नोट :- विभिन्न पुस्तकों व वेबसाइटों के संकलन के आधार पर :-]

Scanned by CamScanner